रविवारीय

इसरो, निजी क्षेत्र और अंतरिक्ष में भारत का भविष्य

डॉ. ब्रह्मदीप अलूने
(अंतर्राष्ट्रीय विषयों के विशेषज्ञ)

इसरो भारत की वह प्रमुख अंतरिक्ष एजेंसी है जिसने सीमित संसाधनों में अभूतपूर्व उपलब्धियां हासिल करके भारत को अंतरिक्ष क्षेत्र की अग्रणी शक्तियों में स्थान दिलाया है. इसरो का भारत के वैज्ञानिक, तकनीकी और सामरिक विकास में अभूतपूर्व योगदान रहा है. दुनिया में भारत को पहचान दिलाने वाला इसरो इस समय बड़े संकट में है. दरअसल अब अनेक वैज्ञानिक और इंजीनियर्स निजी अंतरिक्ष कंपनियों और स्पेस स्टार्टअप्स के कारण इसरो को छो? कर जा रहे है. इसरो में काम करने वाले कई वैज्ञानिक गरीब और साधारण पृष्ठभूमि के रहे है लेकिन अब युवाओं के लिए निजी क्षेत्र में बेहतर और सुनहरे अवसर बड़े है.

इसरो की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि इसके अनेक वैज्ञानिक साधारण और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से निकलकर अपनी प्रतिभा, परिश्रम और राष्ट्रसेवा के बल पर इतिहास रचते रहे है. अंतरिक्ष में भारत का भविष्य आगे क्या होगा, कहीं भारतीय वैज्ञानिक दुनिया की अन्य निजी कम्पनियों की और नहीं चले जाये. वैसे भी अनेक भारतीय वैज्ञानिक पहले ही दूसरे देशों में जाकर बस गए है और वहां जाकर काम कर रहे है. ऐसे में भारत की नई स्पेस पॉलिसी इसरो और देश के लिए चुनौती है या युवाओं के लिए अवसर है,इसका विश्लेषण करना बेहद जरूरी है.

भारत के मिसाइल कार्यक्रम और अंतरिक्ष विज्ञान के इतिहास में डॉ.अब्दुल कलाम का योगदान अतुलनीय है. वे सन 1969 से 1982 तक इसरो से जुड़े रहे और भारत को अंतरिक्ष क्लब में शामिल कराने में सबसे बड़ी भूमिका निभाई. मिसाइल मैन कलाम के पिता एक नाविक थे जो मछुआरों को नाव किराए पर देते थे. आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर थी कि कलाम साहब को स्कूल की पढ़ाई जारी रखने और परिवार की मदद के लिए बचपन में अखबार बेचने का काम करना पड़ा था. पूर्व इसरो प्रमुख डॉ.के.सिवन को रॉकेट मैन कहा जाता है. उनके पिता आम के बागानों में काम करते थे. सिवन ने अपनी कॉलेज की पढ़ाई नंगे पैर और धोती पहनकर पूरी की थी क्योंकि उनके पास जूते खरीदने के पैसे नहीं थे. डॉ.सिवन का इसरो में 1982 से 2022 तक का चार दशकों का सफर बेमिसाल रहा है. स्वदेशी रॉकेट तकनीक के विकास से लेकर इसरो के शीर्ष नेतृत्व तक, उनका योगदान भारत को अंतरिक्ष महाशक्ति बनाने में मील का पत्थर साबित हुआ है.

दूसरी और बेहतर विकल्पों की तलाश में देश से बाहर जाने वाले वैज्ञानिकों की संख्या भी कम नहीं है. कल्पना चावला,अंतरिक्ष में जाने वाली पहली भारतीय मूल की महिला थी. उन्होंने नासा के कोलंबिया अंतरिक्ष शटल मिशन पर एक एयरोस्पेस इंजीनियर और मिशन विशेषज्ञ के रूप में काम किया. अंतरिक्ष विज्ञान में उनका योगदान दुनिया भर की महिलाओं के लिए प्रेरणा है. नासा की सबसे अनुभवी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स ने अंतरिक्ष में सबसे लंबे समय तक स्पेस वॉक करने का रिकॉर्ड बनाया. वे इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन की कमांडर भी रही. अमेरिकी वायु सेना के कर्नल और नासा के अंतरिक्ष यात्री राजाचारी नासा के क्रू- तीन, मिशन के कमांडर के रूप में इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन गए

थे. वे नासा के आगामी आर्टेमिस मिशन का भी हिस्सा है, जो इंसानों को दोबारा चांद पर भेजेगा. भारतीय-अमेरिकी मूल के डॉ.अनिल मेनन एयरोस्पेस मेडिकल विशेषज्ञ और अमेरिकी स्पेस फोर्स के कर्नल है,वे पहले स्पेस एक्स के मुख्य फ्लाइट सर्जन भी रह चुके है. आंध्र प्रदेश में जन्मी एयरोनॉटिकल इंजीनियर सिरीशा बांदला ने 2021 में वर्जिन गैलेक्टिक के कमर्शियल स्पेस शिप से अंतरिक्ष की यात्रा की थी. नासा के मिशनों को लीड करने वाले वैज्ञानिक डॉ.स्वाति मोहन का मार्स 2020 मिशन में प्रमुख योगदान था. अमेरिका ने नासा से आगे बढ़कर एलन मस्क पर भरोसा दिखाया है, अब एलन मस्क की कम्पनी स्पेस एक्स सेटेलाईट लांचिंग से लेकर अमेरिका के कई सामरिक अभियानों का हिस्सा है. यह भी दिलचस्प है कि स्पेस एक्स में काम करने वाले अधिकांश वैज्ञानिक भारतीय ही है. स्पेस एक्स ने अमेरिका को अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, वाणिज्यिक प्रक्षेपण और वैश्विक उपग्रह सेवाओं में अग्रणी बनाया है. अब भारत को भी लगता है कि यदि तकनीकी नवाचार, निजी निवेश, रॉकेट तकनीक और प्रभावी नीतिगत सुधारों पर सुधार किया जाता है तो वह वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में अपनी स्थिति और अधिक मजबूत कर सकता है.

भारत की नई स्पेस नीति और इस क्षेत्र में निजीकरण अमेरिका की नीति पर ही आधारित माना जा रहा है. पिछले एक साल में अनुमानित सौ से एक सौ बीस वैज्ञानिक इसरो छोड़कर स्पेस स्टार्टअप्स से जुड़ गए है. इससे इसरो पर दबाव ब?ा है और इस्तीफ़ा स्वीकार करने के नियमों में भारत की प्रमुख अंतरिक्ष एजेंसी को बदलाव करने के लिए मजबूर होना प?ा है. वैश्विक स्पेस इंडस्ट्री में भारतीय वैज्ञानिकों की मांग उनकी गणितीय सटीकता, कठिन परिस्थितियों में काम करने की क्षमता और तकनीकी सूझबूझ के कारण हमेशा सर्वोच्च रहती है. भारत में इस समय एक सौ पचास से भी ज्यादा स्पेस टेक स्टार्टअप्स काम कर रहे हैं. स्कॉयरूट एयर स्पेस ने नवंबर 2022 में विक्रम-एस नामक रॉकेट लॉन्च किया था जो भारत का पहला निजी तौर पर विकसित रॉकेट था. इसके फाउंडर पवन कुमार चंदना और नागा भरत डाका नामक इसरो के पूर्व वैज्ञानिक हैं. यह कंपनी छोटे उपग्रहों को बहुत ही कम लागत और कम समय में अंतरिक्ष में भेजने के लिए विक्रम सीरीज के रॉकेट बना रही है. अग्निकुल कॉसमॉस ने दुनिया का पहला 3ष्ठ-प्रिंटेड सिंगल-पीस रॉकेट इंजन अग्निबाण विकसित किया है. इस इंजन को पूरी तरह से 3ष्ठ प्रिंटर द्वारा एक बार में बनाया जाता है,जिससे रॉकेट निर्माण की लागत और समय बेहद कम हो जाता है.

इन्होंने इसरो के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के अंदर अपना खुद का निजी लॉन्चपैड भी स्थापित किया है. पिक्सेल कंपनी पृथ्वी के अवलोकन के लिए हाइपरस्पेक्ट्रल उपग्रहों का एक समूह तैयार कर रही है. इनके उपग्रहों से मिलने वाली तस्वीरें इतनी साफ और विस्तृत होती हैं कि उनसे खेती में बीमारियों का पता लगाने, तेल रिसाव ढूंढने और पर्यावरण प्रदूषण की सटीक मैपिंग करने में मदद मिलती है. इन्हें अमेरिकी खुफिया एजेंसी और नासा से भी प्रोजेक्ट्स मिले हैं. दिगंतरा,स्टार्टअप अंतरिक्ष में जमा हो रहे कचरे और ट्रैफिक पर नजर रखने के लिए काम कर रहा है. अंतरिक्ष में हजारों निष्क्रिय उपग्रह और मलबे तैर रहे हैं जो नए रॉकेट्स के लिए खतरा हैं. दिगंतरा दुनिया का पहला स्पेस सिचुएशनल अवेयरनेस नेटवर्क बना रहा है जो उपग्रहों को आपस में टकराने से बचाएगा.

आज इन स्टार्टअप्स में देश-विदेश के बड़े निवेशक करोड़ों डॉलर का निवेश कर रहे है. भारत की निजी स्पेस इंडस्ट्री आने वाले समय में दुनिया के मल्टी-बिलियन डॉलर स्पेस मार्केट पर कब्जा करने की ओर अग्रसर है.

वैज्ञानिकों का इसरो छोड़कर निजी स्पेस स्टार्टअप्स की तरफ रुख करना पहली नजर में देश के लिए एक बड़ा नुकसान लग सकता है, क्योंकि देश के शीर्ष संस्थान से प्रतिभा का पलायन हो रहा है. लेकिन, अंतरिक्ष विज्ञान और आज के आर्थिक परिदृश्य के नजरिए से देखें तो यह देश के लिए एक बहुत बड़ा वरदान और फायदेमंद बदलाव है. पहले भारत के शीर्ष वैज्ञानिक देश छोड़कर नासा या विदेशी कंपनियों में चले जाते थे, जिससे भारत को सीधे तौर पर नुकसान होता था. लेकिन अब वैज्ञानिक देश के भीतर ही भारतीय स्टार्टअप्स से जुड़ रहे है. इससे प्रतिभा और बौद्धिक संपदा भारत के भीतर ही सुरक्षित और विकसित हो रही है. अमेरिका में नासा खुद सारे रॉकेट नहीं बनाता,वह स्पेसएक्स जैसी निजी कंपनियों की सेवाएं लेता है. भारत सरकार भी अब इसी मॉडल पर काम कर रही है.

> अब युवाओं और अनुभवी वैज्ञानिकों के सामने पहले की तुलना में कहीं अधिक आकर्षक वेतन,आधुनिक शोध सुविधाएं, नवाचार की स्वतंत्रता और वैश्विक स्तर पर कार्य करने के अवसर उपलब्ध हो रहे है. ऐसे में यदि प्रतिभाशाली वैज्ञानिक इसरो के बजाय निजी क्षेत्र का रुख करते है, तो यह केवल एक संस्थान का नहीं, बल्कि देश के दीर्घकालीन अंतरिक्ष कार्यक्रम का भी महत्वपूर्ण प्रश्न बन जाता है. इससे भी बड़ी चिंता यह है कि यदि भारत में विकसित वैज्ञानिक प्रतिभाओं को पर्याप्त अवसर, संसाधन और प्रोत्साहन नहीं मिला, तो वे विदेशी निजी अंतरिक्ष कंपनियों या अन्य देशों के शोध संस्थानों की ओर आकर्षित हो सकते है. भारत पहले भी अपने अनेक उत्कृष्ट वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को वैश्विक संस्थानों तक पहुंचते हुए देख चुका है. यदि यही प्रवृत्ति अंतरिक्ष क्षेत्र में बढ़ती है, तो इसका प्रभाव भारत की तकनीकी आत्मनिर्भरता और भविष्य की अंतरिक्ष महत्वाकांक्षाओं पर पड़ सकता है. भारत में निजी क्षेत्र बढ़े या इसरो, इससे ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि क्या भारत ऐसा सशक्त अंतरिक्ष पारिस्थितिकी तंत्र विकसित कर पाएगा,जहां इसरो,निजी उद्योग,स्टार्टअप्स और वैज्ञानिक प्रतिभाएं मिलकर देश को अंतरिक्ष महाशक्ति बनाने की दिशा में कार्य करें. अंतत: चीन जाने से भी देश के वैज्ञानिकों को रोकना होगा. बहरहाल भारत की नई स्पेस पॉलिसी इसरो के लिए चुनौती है या युवाओं के लिए सुनहरा अवसर, इसका जवाब भारत के अंतरिक्ष भविष्य की दिशा और दशा तय करेगा.

व्यंग्य

दोस्त दोस्त न रहा ....!

रवि उपाध्याय
(लेखक व्यंगकार और राजनीतिक समीक्षक हैं)

अंग्रेजी की एक बहु प्रचारित कहावत है अ फ्रेंड इन नीड, इज़ अ फ्रेंड इंडीड. इस 14 अक्षरों की कहावत दोस्ती की पूरी परिभाषा छुपी हुई है. कृष्ण और सुदामा की दोस्ती पौराणिक इतिहास की महत्वपूर्ण घटना के रुप में प्रसिद्ध है. वह दोस्ती निस्वार्थ प्रेम त्याग और मित्रता पर अटूट विश्वास की कहानी है.

इसी तरह हमारे एक दोस्त हैं. दोस्त तो क्या कहिए उन्हें जानी दोस्त कहना भी छोटी उपमा होगी. कहते हैं कि में अकबर बीरबल की दोस्ती भी इतिहास में खूब मशहूर रही है. लेकिन दोस्ती की यह दास्तान विश्वास करने योग्य कताई नहीं लगती है. क्योंकि नवाब और बादशाह किसी के दोस्त नहीं होते हैं. खास तौर से अपने मातहत दरबारी के तो कतई नहीं इसी तरह नेताओं और कार्यकर्ताओं का रिश्ता है. दोनों कभी भी दोस्ती नहीं हो सकती. खैर अब हम अपनी जिगरी दोस्ती पर लौट कर आते हैं. हो सकता है कि किसी अति बुद्धिजीवी को जानी दोस्ती शब्द पसंद न आए. तो ठीक है. तुम्हें जो पसंद हो वो बात तो हम करेंगे नहीं. हम नेता थोड़े ही हैं जो आपको खुश करने के लिए आपकी पसंद की बात करें. हमको कौन कोई चुनाव थो? ही लड़ना है. अरे भाई जब जानी दुश्मन हो सकता है तो जानी दोस्त क्यों नहीं हो सकता है. चलिए अब हम अपनी जानी या जिगरी दोस्ती पर लौट कर आते हैं. ऐसा लगता है कि हमारी दोस्ती शायद कई जन्मों से चली आ रही हो और आगे के जन्म में भी ऐसा हो सकता है. क्योंकि ऐसे टिकाऊ दोस्त मिलते कहां है. जो अपने दोस्त की कोई बात,एक कान से सुनकर दूसरे कान से निष्कासित कर दें. यह विशेष गुण केवल और केवल हमारे प्रिय मित्रवर में ही हैं. इन दिनों तो बाजार में चाइना मेड दोस्ती मौजूद हैं. चलें तो चांद तक, वरना नहीं चले तो शाम तक. फेस बुक फ्रेंड की बात ही न करो तो ही बेहतर है. साले लड़कियों के नाम से प्रोफाइल बनाए बैठे हैं. समझ में ही नहीं आता है कि कौन चौका है और कौन छक्का. भाई ! आजकल प्योर चीज मिलती कहां है. यही हाल आज कल दोस्ती का भी है. हमारी दोस्ती न तो टेस्टेड है और न ही वेस्टेड है. क्योंकि जिस दोस्ती को टेस्टेड कर लिया जाए तो फिर वो दोस्ती कहां रही ? दोस्ती में शक की गुंजाइश कहां होती है ? और जब शक होता है तभी तो टेस्ट की या कहिए की आजमाइश की बात आती है. दोस्ती कोई डिटर्जेंट पॉवडर तो है नहीं कि,पहले इस्तेमाल करें, फिर विश्वास करें. वैसे भी दोस्ती इस्तेमाल की चीज नहीं होती है. यह तो दिल से दिल का रिश्ता होता है. हां तो हमारे मित्र हैं पक्क` मित्र जैसे रूस और भारत की दोस्ती. दोनों देशों की दोस्ती के बीच में तेल भी एक फैक्टर है. पर हमारी दोस्ती के बीच तेल का कोई नामो निशान नहीं है.

परमार वंशीय राजा भोज

साहित्य, कला, दर्शन और आयुर्वेद के अद्वितीय संरक्षक

डॉ आरती दुबे
साहित्यकार एवं शिक्षाविद

भारतीय इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे हैं जिनका स्मरण केवल उनके राजवैभव के कारण नहीं, बल्कि उनकी बौद्धिक प्रतिभा, सांस्कृतिक दृष्टि और लोकहितकारी चिंतन के कारण होता है. परमार वंशीय राजा भोज ऐसे ही यशस्वी सम्राट थे, जिनका नाम मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण, विद्यानुराग और कलापोषण के साथ अत्यंत आदरपूर्वक लिया जाता है. मालवा की धरती पर राज्य करने वाले राजा भोज केवल एक पराक्रमी शासक नहीं थे, बल्कि वे विद्या, साहित्य, कला, स्थापत्य, दर्शन, आयुर्वेद और लोककल्याणकारी चिंतन के अनुपम संरक्षक थे. भारतीय जनमानस में प्रचलित उक्ति—कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली—के पीछे भी उनके विलक्षण व्यक्तित्व, ऊँचे सांस्कृतिक स्तर और महान शासकीय गौरव की स्मृति निहित है.

राजा भोज का शासनकाल सामान्यत: 11वीं शताब्दी में माना जाता है. वे मालवा के परमार शासक थे और उनकी राजधानी धार थी, जो उनके समय में शिक्षा, विद्वत्ता और शास्त्रार्थ का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र बन गई थी. भोज ने राज्य को केवल राजनीतिक दृष्टि से संगठित नहीं किया, बल्कि उसे ज्ञान, संस्कृति और सृजनशीलता की उर्वर भूमि में रूपांतरित किया. यही कारण है कि इतिहास और लोककथा दोनों में उनका व्यक्तित्व एक

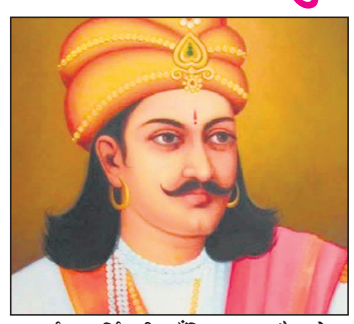

आदर्श राजर्षि की भाँति उभरता है—ऐसा शासक जिसमें शौर्य और शास्त्र, राजनीति और रसज्ञान, प्रशासन और अध्यात्म—सभी का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है.

साहित्य के क्षेत्र में राजा भोज का अप्रतिम योगदान- राजा भोज की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे केवल विद्वानों के संरक्षक नहीं थे, बल्कि स्वयं भी उच्चकोटि के विद्वान और ग्रंथकार माने जाते हैं. परंपरा में उनके नाम से अनेक संस्कृत ग्रंथों का उल्लेख मिलता है. यद्यपि इन सभी ग्रंथों की रचनाकारिता पर इतिहासकारों में मतभेद हो सकते हैं, तथापि यह निर्विवाद है कि भोज का दरबार साहित्यिक और शास्त्रीय रचनाशीलता का महान केन्द्र था.

राजा भोज से सम्बद्ध ग्रंथों में 'सरस्वतीकण्ठाभरण' विशेष रूप से उल्लेखनीय है. यह ग्रंथ संस्कृत काव्यशास्त्र और अलंकार परंपरा में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है. इसमें भाषा की सौष्ठवपूर्ण अभिव्यक्ति, काव्य की संरचना, अलंकारों की भूमिका और साहित्यिक सौंदर्य के तत्त्वों का विवेचन मिलता है. इससे स्पष्ट होता है कि भोज केवल काव्य के रसिक नहीं थे, बल्कि वे काव्य की आंतरिक संरचना और उसकी कलात्मक शक्ति को गहराई से समझते थे.

इसी प्रकार 'शृंगारप्रकाश' को भी भोज के साहित्यिक अवदान का श्रेष्ठ उदाहरण माना जाता है. यह ग्रंथ केवल शृंगार-रस का साधारण विवेचन नहीं करता, बल्कि भारतीय काव्यदर्शन में रस, भाव, सौंदर्य और अनुभूति की व्यापक समझ प्रस्तुत करता है. इस कृति से यह सिद्ध होता है कि राजा भोज के लिए साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं था; वह मानव-हृदय की संवेदनाओं का परिष्कार और सांस्कृतिक चेतना का विस्तार था. भोज की साहित्य-दृष्टि का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि उन्होंने विद्वानों, कवियों और शास्त्रियों को संरक्षण देकर एक ऐसा बौद्धिक वातावरण निर्मित किया जिसमें ज्ञान की अनेक धाराएँ एक साथ प्रवाहित हो सकीं. धार और भोजशाला का नाम इसी परंपरा से जुड़ता है. उनके शासन में संस्कृत भाषा केवल राजाश्रित प्रतिष्ठा का माध्यम नहीं रही, बल्कि वह विवेक, विद्वत्ता और सांस्कृतिक संवाद की भाषा बनकर विकसित हुई.

कला और स्थापत्य के संरक्षक के रूप में राजा भोज- राजा भोज का व्यक्तित्व भारतीय कला-संवेदना का भी अनुपम प्रतिनिधि है. वे समझते थे कि किसी सभ्यता की महानता केवल उसकी राजनीतिक शक्ति से नहीं, बल्कि उसकी सृजनशीलता, स्थापत्य-कौशल और सौंदर्यबोध से मापी जाती है. इसलिए उन्होंने कला और स्थापत्य को विशेष संरक्षण दिया. उनके नाम से जुड़ी भोजशाला केवल एक इमारत नहीं, बल्कि विद्या, शास्त्र और कला के समन्वित केन्द्र की स्मृति है. भोजशाला का सांस्कृतिक महत्व इस बात में है कि वह उस परंपरा का प्रतीक है जिसमें मंदिर, विद्यालय, सभा और शास्त्रार्थ-कक्ष—ये सभी ज्ञान-संस्कृति के एक ही व्यापक परिसर का अंग होते थे.

लोकतंत्र का वास्तविक अर्थ यही है कि सरकार और नागरिक दोनों एक-दूसरे की बात सुनें, संविधान की भावना का सम्मान करें और किसी भी मतभेद का समाधान संवाद, सहमति और जनहित के मार्ग से खोजें. इतिहास केवल यह याद नहीं रखता कि किसने शासन किया; इतिहास यह भी याद रखता है कि कठिन समय में किसने मानव जीवन को सर्वोच्च मूल्य माना.

लोकतंत्र की शक्ति मौन नहीं संवाद

डॉ. अंकिता त्रिपाठी

लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति उसकी संवेदनशीलता, संवाद की संस्कृति और असहमति को सम्मानपूर्वक सुनने की क्षमता होती है. किसी भी लोकतांत्रिक शासन की सफलता केवल चुनाव जीतने से नहीं मापी जाती, बल्कि इस बात से भी मापी जाती है कि वह विरोध की आवाज़ों के प्रति कितना धैर्य, संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व प्रदर्शित करता है.

यदि कोई व्यक्ति अपने विचारों और मांगों के समर्थन में आमरण अनशन का मार्ग अपनाता है, तो उससे सहमत या असहमत होना अलग विषय है; किंतु उसके जीवन की रक्षा करना और उससे संवाद स्थापित करना राज्य का संवैधानिक तथा नैतिक दायित्व है. लोकतंत्र में विरोधी विचारों को शत्रु नहीं माना जाता, बल्कि उन्हें लोकतांत्रिक विमर्श का आवश्यक अंग समझा जाता है. आज देश के प्रसिद्ध पर्यावरणविद् एवं सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक लंबे समय से भूख हड़ताल पर हैं. यदि वास्तव में इतने दिनों के उपवास के बावजूद सरकार का कोई अधिकृत प्रतिनिधिमंडल उनसे मिलने, उनकी बात सुनने अथवा वार्ता प्रारंभ करने नहीं गया है, तो यह स्थिति कई गंभीर प्रश्न खड़े करती है. प्रश्न केवल उनकी मांगों का नहीं है; प्रश्न यह है कि क्या किसी नागरिक का जीवन राजनीतिक मतभेदों से कम मूल्यवान हो गया है? क्या सरकार और जनता के बीच संवाद की परंपरा इतनी कमजोर हो गई है कि बातचीत का स्थान मौन ने ले लिया है? लोकतंत्र में सरकार की शक्ति उसके मौन में नहीं, बल्कि संवाद में दिखाई देती है. वार्ता करना मांगों को स्वीकार करना नहीं होता. वार्ता का अर्थ केवल इतना होता है कि सरकार अपने नागरिकों की बात सुनने को तैयार है. यदि किसी मांग से असहमति है, तो उसके पक्ष-विपक्ष में तथ्य रखे जा सकते हैं. परंतु संवाद से ही लोकतांत्रिक समाधान निकलते हैं; मौन केवल अविश्वास को जन्म देता है.

इतिहास इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण संदेश देता है. स्वतंत्रता संग्राम के दौरान शहीद भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त, जतिन दास तथा उनके साथियों ने जेल में लंबी भूख हड़ताल की थी. ब्रिटिश सरकार उनके विचारों से सहमत नहीं थी, फिर भी उनके जीवन को बचाने के लिए बलपूर्वक भोजन कराने के प्रयास किए गए. उस दौर की नीतियों और तरीकों पर मतभेद हो सकते हैं, परंतु यह तथ्य स्पष्ट करता है कि शासन को यह भय था कि यदि किसी अनशनकारी की मृत्यु हो गई, तो वह शासन की नैतिक जिम्मेदारी मानी जाएगी. आज जब भारत स्वयं एक लोकतांत्रिक गणराज्य है, तब उससे अपेक्षा कहीं अधिक है कि वह किसी भी आंदोलनकारी के जीवन की रक्षा के लिए संवाद और संवेदनशीलता का मार्ग अपनाए.

चिकित्सा विज्ञान हमें बताता है कि लंबे समय तक भोजन न करने से शरीर की ऊर्जा समाप्त होने लगती है, मांसपेशियाँ क्षीण होती हैं, हृदय, गुर्दे, यकृत तथा मस्तिष्क सहित अनेक अंग प्रभावित हो सकते हैं. किंतु कोई भी चिकित्सक यह निश्चित नहीं बता सकता कि किस दिन, किस क्षण किसी व्यक्ति की शारीरिक क्षमता उत्तर देना बंद कर देगी. प्रत्येक शरीर की सहनशीलता अलग होती है. इसलिए लंबे अनशन को कभी भी सामान्य घटना मानकर नहीं छोड़ा जा सकता. सोनम वांगचुक की अनेक मांगें शिक्षा, पर्यावरण, हिमालयी क्षेत्रों के संरक्षण और जनहित से जुड़ी बताई जाती हैं. चाहे सरकार इन मांगों को उचित माने या अनुचित, परंतु इन विषयों पर राष्ट्रीय स्तर पर गंभीर विमर्श होना चाहिए. शिक्षा का बढ़ता व्यावसायीकरण आज वास्तव में चिंता का विषय है.

श्री राम मंदिर चढ़ावा चोरी प्रकरण

राजीव खण्डेलवाल
(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व अध्यक्ष, बैतूल सुधार न्यास)

राम मंदिर आंदोलन व ट्रस्ट से जुड़े व्यक्तियों, ट्रस्टियों, संत समाज, विपक्षी नेताओं तथा दानदाताओं द्वारा सार्वजनिक रूप से दिए गए. बयानों से यह स्पष्ट है कि मामला सिर्फ राजनीतिक विवाद तक सीमित नहीं है बल्कि करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था, सार्वजनिक विश्वास और संस्थागत जवाबदेही का चिंताजनक विषय बन चुका है.

इस पूरे प्रकरण में चार घटनाएं विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करती हैं. प्रथम जमीन घोटाला: आप सांसद संजय सिंह ने अचल संपत्ति की 11 रजिस्ट्रियों में गडबडियों के आरोप लगाये. उनमे से हम एक ही जमीन का उदाहरण ले ले. 18 मार्च 2021 को सुल्तान अंसारी व विनोद तिवारी ने कुसुम पाठक से 2 करोड़ में जमीन खरीदी, लगभग 5 मिनट बाद वह जमीन 18.5 करोड़ में चंपत राय का बेच दी गई. इस रजिस्ट्री के संबंध में अभी तक निम्न अनुत्तरित प्रश्न है, जो मामले को बेहद गंभीर बनाते हैं.

1). मात्र 5 मिनट (7.10सायं-7.15 सायं) के अंतराल में विक्रय की गई भूमि की पुन: विक्रय रजिस्ट्री होना आश्चर्यजनक है? 2). क्रेता (चंपत राय) को भूमि की बिक्री होने के मात्र 5 मिनट के भीतर में भूमि की रजिस्ट्री होने की जानकारी कैसे मिली? क्या यह पूर्व जानकारी होने के बिना संभव थां? 3). क्या 5 मिनट में पहले क्रेता द्वारा खरीदी गई भूमि का नामंतरण विक्रय के पूर्व उसके नाम से हो जाना संभव था? जिसके लिए सूचना पत्र जारी करना व प्रकाशन किया जाना आवश्यक होता है, अथवा. 4). बिना नामंतरण के ही रजिस्ट्री हो गई? कैसे संभव है? 5). रजिस्ट्री चंपत राय के नाम से हुई. ट्रस्ट अथवा भगवान श्रीराम के नाम से क्यों नहीं? 6). पांच मिनट में स्टांप खरीदकर टाइप कराकर विक्रय विलेख लिखाकर, रजिस्ट्रार आफिस में रजिस्ट्री करा लिया जाना? कैसे हो सकता है? क्रेता-विक्रेता के सिर्फ रजिस्ट्री के 15 दिवस के पूर्व व बाद के बैंक खाते मांगे जाने के बावजूद नहीं मिले? दूसरी, प्राथमिकी दर्ज होने से पहले विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया गया. सामान्य परिस्थितियों में सामान्य प्रक्रिया, पहले शिकायत, फिर एफआईआर और उसके बाद जांच, विशेष जांच, विशेष जांच दल गठित कर प्रक्रिया अपनाई जाती है. वर्तमान प्रकरण में अपनाई गई, ''अलग प्रक्रिया'' का विधिक आधार क्या है? नहीं बतलाया गया. तीसरी, गिरफ्तार किए गए, आरोपियों का प्रथम अवसर पर पुलिस रिमांड पर न लेकर सीधे न्यायिक अभिरक्षा में भेजे जाने का कारण/स्पष्टीकरण नहीं? चौथा, अनेक दानदाताओं द्वारा बहुमूल्य वस्तुओं की रसीद, अभिलेख और वर्तमान स्थिति को लेकर सार्वजनिक प्रश्न उठाए गए. खासकर दान की रसीद न देने को लेकर जिसका तुरंत जवाब न दिया जाकर ट्रस्ट की बैठक के बाद पत्रकार वार्ता में ''कुछ'' जानकारी दी गई थी.

इस पूरे विवाद का सबसे गंभीर पक्ष व चिंता धनराशि का न होकर करो?ों श्रद्धालुओं के मन में श्रद्धा से अर्पित दान की सुरक्षा, पारदर्शिता को लेकर संदेह उत्पन्न हो गया.

पारदर्शिता ही सबसे बड़ा उत्तर

इस पूरे विवाद का समाधान केवल खंडन या समर्थन से नहीं निकलेगा. यदि आरोप निराधार हैं, तो दस्तावेज, लेखा-परीक्षा, सीसीटीवी रिकॉर्ड, डिजिटल सूची और स्वतंत्र जांच उन्हें स्वत: असत्य सिद्ध कर देंगे. दुर्भाग्य से उच्चतम न्यायालय ने एसआईटी से जो ''स्टेटस रिपोर्ट'' मांगी है, वह भी सील बंद लिफाफे में? विपरीत इसके जहां अपराध घटित हुआ है, तो दोषी चाहे कितना भी प्रभावशाली क्यों न हो, उसके विरुद्ध कार्रवाई होना ही कानून के शासन की कसौटी होगी. यही कारण है कि अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने दैनिक आय-व्यय, दान की सूची, बहुमूल्य वस्तुओं का डिजिटल अभिलेख तथा समय-समय पर स्वतंत्र ऑडिट सार्वजनिक करने का सुझाव दिया है. इससे भविष्य में इस प्रकार के विवादों की संभावना भी कम होगी. 'इस बात से इंकार नहीं कर सकते कि आज भी कुछ प्रश्न उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे है :-1. जिन लोगों ने बहुमूल्य दान दिए, उन्हें रसीदें और अभिलेख क्यों नहीं मिले . 2. यदि सभी व्यवस्थाएं पारदर्शी थीं, तो इतने व्यापक स्तर पर संदेह उत्पन्न क्यों हुआ? 3. चोरी, डकैती व गबन का वास्तविक ''आकार'' क्या है? 4. यदि सिर्फ कुछ कर्मचारी ही दोषी थे, तो निगरानी व्यवस्था इतनी कमजोर क्यों रही? 5. यदि वरिष्ठ पदाधिकारी निर्दोष हैं, तो उन्हें संदेह से मुक्त करने के लिए जांच रिपोर्ट सार्वजनिक करने में संकोच क्यों होना चाहिए?लोकतंत्र में अंतिम निर्णय अदालत देती है, किंतु अंतिम ''राय'' समाज बनाता है. इस पूरे प्रकरण में अनेक आरोप-प्रत्यारोप स्पष्टीकरण और दावे सामने आये हैं. इनका उत्तर राजनैतिक मंचो पर नहीं बल्कि अंतिम सत्य केवल निष्पक्ष जांच, न्यायिक प्रक्रिया और प्रमाणों से ही स्थापित होगा. तभी ''दूध का दूध और पानी का पानी'' हो सकेगा. लेकिन इतना अवश्य कहा जा सकता है कि श्रीराम केवल एक मंदिर का नाम नहीं हैं, वे करोड़ों भारतीयों की आस्था, मर्यादा और विश्वास के प्रतीक हैं.